ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में परमेश्वर की भक्ति के लिए एक महान प्रवर्तक-कबीर

डॉ आलोक मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग, एस एस कॉलेज, शाहजहांपुर

सारांश

कबीर या कबीर साहेब जी 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और संत थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में परमेश्वर की भक्ति के लिए एक महान प्रवर्तक के रूप में उभरे। इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया। उनका लेखन सिक्खों के आदि ग्रंथ में भी देखने को मिलता है। वे हिन्दू धर्म व इस्लाम को न मानते हुए धर्म एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास रखते थे। उन्होंने सामाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांड, अंधविश्वास की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना भी। उनके जीवनकाल के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें बहुत प्रताड़ित किया।कबीर पंथ नामक धार्मिक सम्प्रदाय इनकी शिक्षाओं के अनुयायी हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें मस्तमौला कहा।कबीर साहेब का (लगभग 14वीं-15वीं शताब्दी) जन्म स्थान काशी, उत्तर है। कबीर साहेब का प्राकट्य सन 1398 (संवत 1455), में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को ब्रह्ममूहर्त के समय कमल के पुष्प पर हुआ था. कबीर साहेब (परमेश्वर) जी का जन्म माता पिता से नहीं हुआ बल्कि वह हर युग में अपने निज धाम सतलोक से चलकर पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। कबीर साहेब जी लीलामय शरीर में बालक रूप में नीरु और नीमा को काशी के लहरतारा तालाब में एक कमल के पुष्प के ऊपर मिले थे।

अनंत कोट ब्रह्मांड में, बंदी छोड़ कहाए | सो तो एक कबीर हैं, जो जननी जन्या न माए ||

परमात्मा कबीर जी जनसाधारण में सामान्यतः कलयुग में "कबीर दास" नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा उन्होंने बनारस (काशी, उत्तर प्रदेश) में जुलाहे की भूमिका की। परंतु विडंबना यह है कि सर्व सृष्टि के रचनहार, भगवान स्वयं धरती पर अवतरित हुए और स्वयं को दास शब्द से सम्बोधित किया। कबीर साहेब के वास्तविक रूप से सभी अनजान थे सिवाय उनके जिन्हें कबीर साहेब ने स्वयं दर्शन दिए और अपनी वास्तविक स्थिति से परिचित कराया जिनमें शिख धर्म के परवर्तक नानक देव जी (तलवंडी, पंजाब), आदरणीय धर्मदास जी (बांधवगढ़, मध्यप्रदेश), दादू साहेब जी (गुजरात) आदि आदि शामिल हैं। वेद भी पूर्ण परमेश्वर जी की इस लीला की गवाही देते हैं इस मंत्र में परमेश्वर कबीर जी को "तस्कर" अर्थात छिप कर कार्य करने वाला कहा है। नानक जी ने भी परमेश्वर कबीर साहेब की वास्तविक स्थिति से परिचित होने पर उन्हें "ठग" कहा है।

परिचय

सभी धर्मों के धर्मग्रंथ यही प्रमाण देते हैं कि कबीर साहेब जी ही पूर्ण परमात्मा है:

पवित्र वेदों में प्रमाण

यजुर्वेद: यजुर्वेद में प्रमाण है कि कबीर परमेश्वर अपने तत्वज्ञान के प्रचार हेतु पृथ्वी पर स्वयं अवतरित होते हैं। वेदों में परमेश्वर कबीर का नाम कविर्देव वर्णित है।[1,2]

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

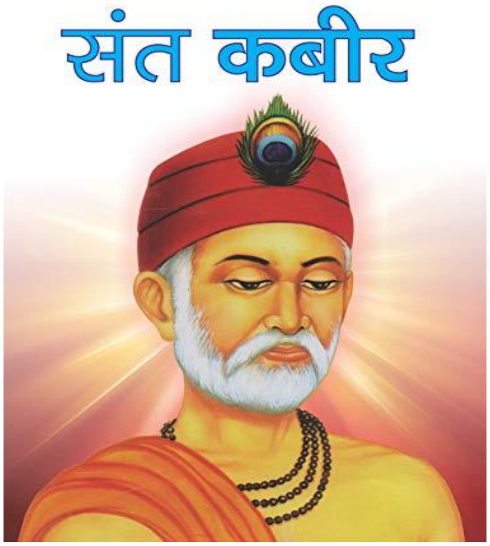

यजुर्वेद अध्याय 29 मन्त्र 25
समिद्धोऽअद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः। आ च वह मित्रामहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

भावार्थ- जिस समय भक्त समाज से शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) कराया जा रहा होता है। उस समय कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्वज्ञान को प्रकट होते हैं।

ऋग्वेद: यह उधृत है कि पूर्ण परमेश्वर शिशु रूप में प्रकट होकर अपनी प्यारी आत्माओं को अपना तत्वज्ञान प्रचार अपनी वाणी यानि कबीर वाणी से करते हैं।
ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17
शिशुम् जज्ञानम् हर्य तम् मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निमरूतः गणेन। कविर्गीर्भि काव्येना कविर् सन्त् सोमः पवित्राम् अत्येति रेभन्।।17।।

भावार्थ - वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में प्रकट होकर पूर्ण परमात्मा कविर्देव अपने वास्तविक ज्ञान को अपनी कविर्गिभिः अर्थात कबीर वाणी द्वारा निर्मल ज्ञान अपने हंसात्माओं अर्थात् पुण्यात्मा अनुयायियों को कवि रूप में कविताओं, लोकोक्तियों के माध्यम से वर्णन करते हैं। वह स्वयं सतपुरुष कबीर ही होतें है।[3,4]
परमात्मा के अन्य अनेकों गुणों का वर्णन निम्न अध्याय में वर्णित है:

- ऋग्वेद मंडल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19,20
- ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 90 मन्त्र 3,4,5,15,16
- यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 26,30
- यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25
- सामवेद संख्या नं. 359, अध्याय 4 खंड 25, श्लोक 8
- सामवेद संख्या नं. 1400, अध्याय 12, कांड 3, श्लोक 8
- अथर्वेद कांड नं. 4, अनुवाक 1, मन्त्र 1,2,3,4,5,6,7

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

पवित्र कुरान शरीफ में प्रमाण

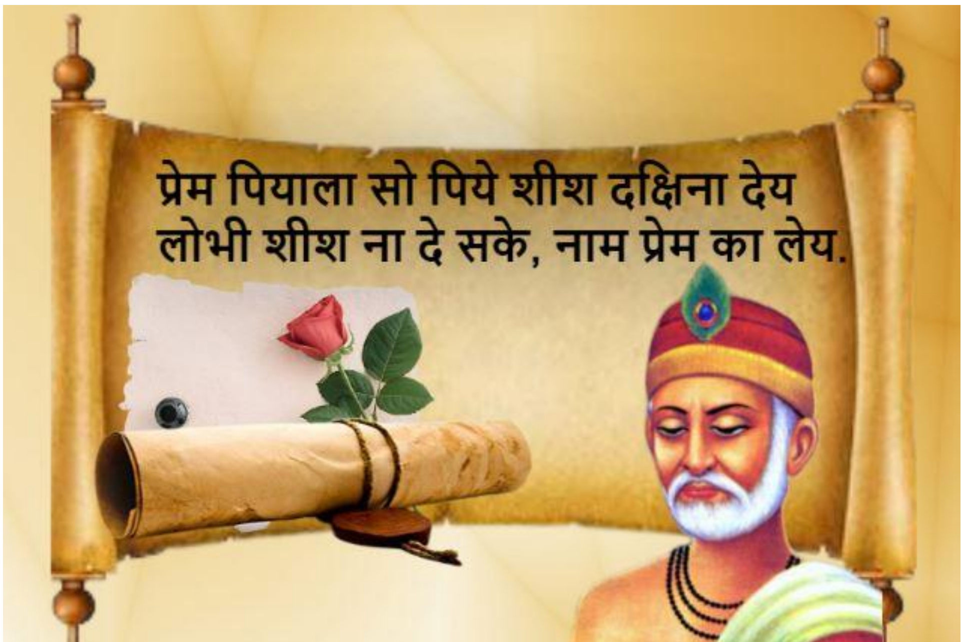

पवित्र कुरान शरीफ, सूरत फुरकान 25, आयत 52 से 59 में कहा गया है कि "तुम काफिरों का कहा न मानना क्योंकि वे कबीर को अल्लाह नहीं मानते। कुरान में विश्वास रखो और अल्लाह के लिए संघर्ष करो और उस अल्लाह की बड़ाई करो। "साथ ही आयात 25:59 में कुरान ज्ञानदाता कहता है कि वह कबीर अल्लाह है जिसने धरती और आकाश तथा इनके बीच जो कुछ है की सबको छः दिनों में रचकर सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, उसके बारे में किसी बाख़बर से पूछो।

पवित्र बाइबल में प्रमाण

पवित्र बाइबल में भी प्रमाण है कि परमेश्वर कबीर साकार तथा मनुष्य दृश्य है। पवित्र बाइबल के उत्पत्ति ग्रन्थ के अध्याय 1:26 और 1:27 में प्रमाण है कि परमेश्वर ने 6 दिनों में सृष्टि रची। बाइबल के अध्याय 3 के 3:8,3:9,3:10 में प्रमाण है कि परमात्मा सशरीर है। बाइबल के उत्पत्ति ग्रन्थ 18:1 में भी प्रमाण है कि परमेश्वर अब्राहम के समक्ष प्रकट इससे यह स्पष्ट होता है परमेश्वर सशरीर है। ऑर्थोडॉक्स यहूदी बाइबल के अय्यूब 36:5 में प्रमाण है कि "परमेश्वर कबीर (शक्तिशाली) है, परंतु वह लोगों से घृणा नहीं करता है।परमेश्वर कबीर (सामर्थी) है और विवेकपूर्ण है।"[5,6]

पवित्र गुरु ग्रन्थ साहेब में प्रमाण

गुरु ग्रन्थ साहेब के पृष्ठ 24 राग सिरी, महला 1, शब्द संख्या 9; गुरु ग्रंथ साहेब पृष्ठ 721 महला 1 तथा गुरु ग्रंथ साहेब, राग असावरी, महला 1 के अन्य भागों में यह प्रमाण मिलता है कि:

गुरु ग्रन्थ साहेब में प्रमाण है कि कबीर साहेब ही वह पूर्ण परमात्मा हैं जिसने सर्व ब्रह्मांडों की रचना की। वह साकार है और उसी परमेश्वर कबीर जी ने आज से लगभग 600 साल पहले काशी, उत्तर प्रदेश में जुलाहे की भूमिका भी निभाई।

काल की कबीर परमात्मा से वार्ता: एक समय जब कबीर परमात्मा काल के लोक में तपत शिला पर आत्माओं को ज्ञान समझा रहे थे तब काल ने कबीर परमात्मा से कहा था कि जब आप कलयुग में पृथ्वी लोक पर जाओगे तो में 12 नकली पंथ चलाऊँगा तथा लोगों को भरमाऊँगा। इसके प्रति उत्तर में कबीर परमात्मा जी ने कहा था जी कि कलयुग में अपना अंस भेजूँगा जो 13 वां

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

पंथ होगा तथा उससे ही सभी प्राणियों का उद्धार होगा। वर्तमान में सथार्थ कबीर पंथ ही 13 वां पंथ है जो संत रामपाल जी महाराज द्वारा चलाया गया है। [7,8]

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वारा प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से:-

कबीर साहेब ने कबीर सागर में कबीर वाणी पृष्ठ 134 पर लिखा है:-

"बारहवें वंश प्रकट होय उजियारा,
तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा"

भावार्थ:- कबीर परमेश्वर ने अपनी वाणी में काल से कहा था कि जब तेरे बारह पंथ चल चुके होंगे तब मैं अपना नाद (वचन-शिष्य परम्परा वाला) वंश अर्थात् अंश भेजूंगा। बारहवां वंश (अंश) संत गरीबदास जी कबीर वाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ-कुछ संशय युक्त विस्तार करेगा। जैसे संत गरीबदास जी की परम्परा में परमेश्वर कबीर जी को विष्णु अवतार मान कर साधना तथा प्रचार करते हैं। इसलिए लिखा है कि तेरहवां वंश पूर्ण रूप से अज्ञान अंधेरा समाप्त करके परमेश्वर कबीर जी की वास्तविक महिमा तथा नाम का ज्ञान करा कर सभी पंथों को समाप्त करके एक ही पंथ चलाएगा, वह तेरहवां वंश स्वयं ही खुद कबीर साहेब होंगे।

वर्ष 1997 में मार्च माह में फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष को प्रात: लगभग 10 बजे सत्यलोक (सनातन स्थान) से प्रभु कबीर जी आए और जिंदा संत के रूप में संत रामपाल जी महाराज को मिले। उन्होंने आकर उन्हें सतनाम और सारनाम देने का आदेश दिया।

कबीर साहिब जी ताउम्र काशी में रहे। परंतु 120 वर्ष की आयु में कबीर जी काशी से अपने अनुयायियों के साथ मगहर के लिए रवाना हुए । 120 वर्ष के होते हुए भी उन्होंने 3 दिन में काशी से मगहर का सफर तय किया। उन दिनों काशी के नकली धर्मगुरुओं ने यह धारणा (अफवाह) फैला रखी थी कि जो मगहर में मरेगा वह तो गधा बनेगा और जो काशी में मरेगा वह सीधा स्वर्ग जाएगा।[9,10]

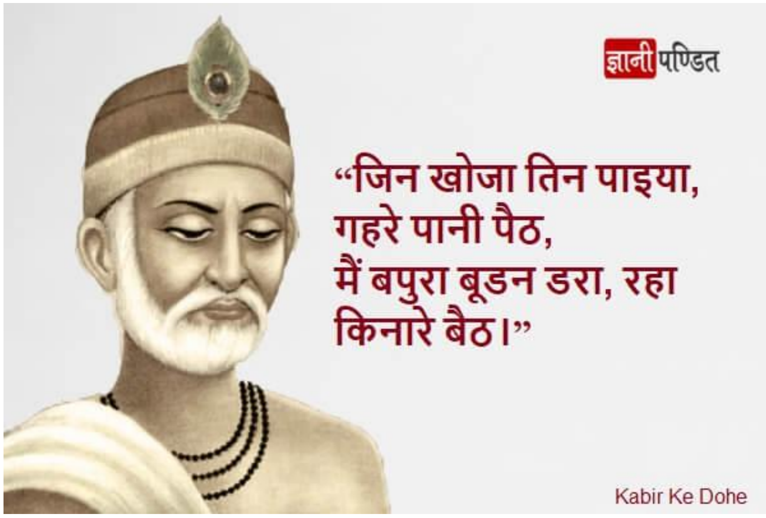

काशी में पाखंडी पंडितों द्वारा करौंत की स्थापना

आज से लगभग 600 वर्ष पहले काशी में धर्मगुरुओं द्वारा मोक्ष प्राप्ति के लिए गंगा दरिया के किनारे एकांत स्थान पर एक नया घाट बनाया गया और वहां पर एक करौंत लगाई। धर्मगुरूओं ने एक योजना बनाई कि भगवान शिव का आदेश हुआ है कि जो

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

काशी नगर में प्राण त्यागेगा, वह सीधे स्वर्ग जाएगा। जो शीघ्र ही स्वर्ग जाना चाहता है, वह करौंत द्वारा मुक्ति करवा सकता है। जो मगहर नगर (गोरखपुर के पास उत्तरप्रदेश में) वर्तमान में जिला-संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश) में है, उसमें मरेगा, वह नरक जाएगा या गधे का शरीर प्राप्त करेगा। गुरूजनों की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना अनुयाईयों का परम कर्तव्य माना गया है। इसलिए हिन्दु लोग अपने-अपने माता-पिता को आयु के अंतिम समय में काशी (बनारस) शहर में किराए पर मकान लेकर छोड़ने लगे। अपनी जिंदगी से परेशान वृद्ध व्यक्ति अपने पुत्रों से कह देते थे एक दिन तो भगवान के घर जाना ही है इसलिए हमें आप काशी में छोड़ आओ हमारा उद्धार शीघ्र हो जाएगा इस प्रकार धर्मगुरुओं द्वारा शास्त्रों के विरुद्ध विधि बता कर मोक्ष के नाम पर काशी में करौंत से हजारों व्यक्तियों को मृत्यु के घाट उतारा जाने लगा। इस गलत धारणा को कबीर परमेश्वर लोगों के दिमाग से निकालना चाहते थे। वह लोगों को बताना चाहते थे कि धरती के भरोसे ना रहें क्योंकि मथुरा में रहने से भी कृष्ण जी की मुक्ति नहीं हुई। उसी धरती पर कंस जैसे राजा भी डावांडोल रहे।

कबीर साहेब जी के शरीर की जगह मिले थे फूल

उस समय काशी का हिंदू राजा बीर सिंह बघेल और मगहर रियासत का मुस्लिम नवाब बिजली खाँ पठान दोनों ही कबीर साहेब के प्रिय शिष्य थे। बिजली खाँ पठान ने कबीर साहिब से नाम उपदेश लेकर अपने देश में मांस मिट्टी तक खाना बंद करवा दिया था। इसी प्रकार राजा बीर सिंह बघेल भी कबीर साहिब जी की हर बात को मानते थे। जब कबीर साहेब जी काशी से मगहर के लिए रवाना हुए तो बीर सिंह बघेल अपनी सेना के साथ चल पड़ा। उसने निश्चय किया कि कबीर परमेश्वर के शरीर छोड़ने के पश्चात उनके शरीर को काशी लाएंगे तथा हिंदु रीति से उनका अंतिम संस्कार करेंगे। अगर मुसलमान नहीं माने तो युद्ध करके उनके मृत शरीर को लेकर आएंगे। दूसरी तरफ जब बिजली खाँ पठान ने भी पूरी व्यवस्था कर ली थी।[11,12]

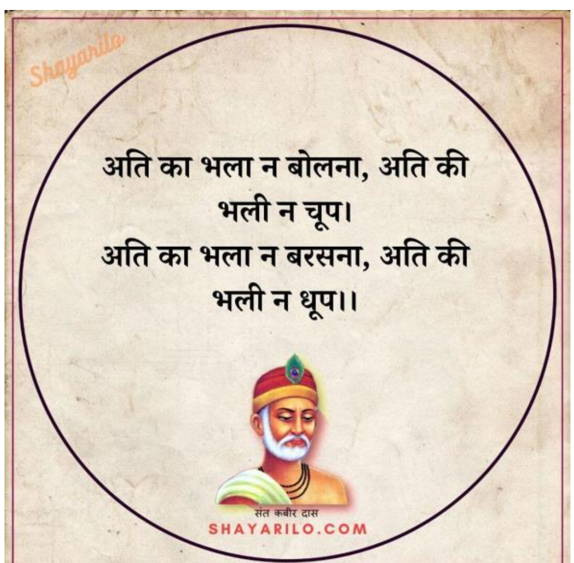

मगहर पहुंचने पर कबीर परमेश्वर जी ने बिजली खाँ पठान से कहा कि , "मैं स्नान करूंगा"। इस पर बिजली खाँ पठान ने कहा "आपके लिए स्वच्छ जल ला रखा है गुरूवर", परंतु कबीर जी ने कहा कि मैं बहते पानी (दरिया) में स्नान करूंगा। बिजली खाँ पठान ने बताया कि यहां पास ही 'आमी नदी' है जो भगवान शिव के श्राप से सूखी पड़ी है। तब परमेश्वर कबीर जी ने नदी की और चलने का इशारा किया और नदी में पानी पूरे वेग से बहने लगा। वहां पर खड़े सब लोगों ने "सतगुरु देव की जय के जयकारे" लगाने शुरू कर दिए। आज भी मगहर में वह आमी नदी बहती है।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

कबीर परमेश्वर जी ने देखा की यह दोनों आपस में कट के मरेंगे और हिन्दू मुस्लिम का गृह युद्ध छिड़ जाएगा। तब परमेश्वर कबीर जी ने दोनों को समझाया और आदेश दिया कि मेरे शरीर त्यागने के उपरांत दो चादरों के बीच जो वस्तु मिले उसको दोनों आधा-आधा आपस में बांट लेना और मेरे जाने के बाद कोई किसी से लड़ाई नहीं करेगा। सब चुप थे पर मन ही मन सब सोच रहे थे कि एक बार परमेश्वर जी को अंतिम यात्रा पर विदा हो जाने दो फिर वही करेंगे जो हम चाहेंगे। एक चादर नीचे बिछाई गई जिस पर कुछ फूल भी बिछाए गए। परमेश्वर चादर पर लेट गए। दूसरी चादर ऊपर ओढ़ी और सन 1518 में परमेश्वर कबीर साहिब सशरीर सतलोक गमन कर गए।[

थोड़ी देर बाद आकाशवाणी हुई:
"उठा लो पर्दा, इसमें नहीं है मुर्दा"
कबीर परमात्मा का शरीर नहीं बल्कि वहां सुगन्धित फूल मिले, जिसको दोनों राजाओं ने आधा आधा आपस में बांट लिया। दोनों धर्मों के लोग आपस में गले लग कर खूब रोए। परमात्मा कबीर जी ने इस लीला से दोनों धर्मों का वैरभाव भी समाप्त हो गया। मगहर में आज भी हिंदू मुस्लिम धर्म के लोग प्रेम से रहते हैं। इस पर परमात्मा कबीर जी ने अपनी वाणी में भी लिखा है:-
सत् कबीर नहीं नर देही, जारै जरत ना गाड़े गड़ही।
पठयो दूत पुनि जहाँ पठाना, सुनिके खान अचंभौ माना।
दोई दल आई सलाहा अजबही, बने गुरु नहीं भेंटे तबही।
दोनों देख तबै पछतावा, ऐसे गुरु चिन्ह नहीं पावा।
दोऊ दीन कीन्ह बड़ शोगा, चकित भए सबै पुनि लोंगा।
कबीर की भाषा सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी है। इनकी भाषा में हिंदी भाषा की सभी बोलियों के शब्द सम्मिलित हैं। राजस्थानी, हरयाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा के शब्दों की बहुलता है।ऐसा माना जाता है की रमैनी और सबद में ब्रजभाषा की अधिकता है तो साखी में राजस्थानी व पंजाबी मिली खड़ी बोली की।

विचार – विमर्श

कबीर साहेब जी के यहाँ साधु संतों का जमावड़ा रहता था। कबीर साहेब जी ने कलयुग में पढ़े-लिखे ना होने की लीला की, परंतु वास्तव में वे स्वयं विद्वान है। इसका अंदाजा आप उनके दोहों से लगा सकते हैं जैसे - 'मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।

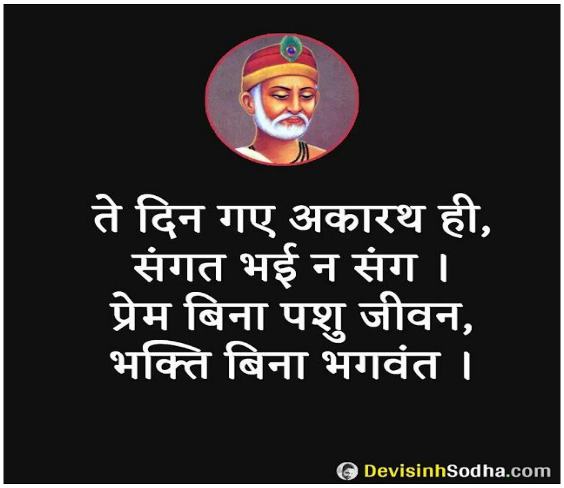

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

'उन्होंने स्वयं ग्रंथ ना लिखने की भी लीला तथा अपने मुख कमल से वाणी बोलकर शिष्यों ने उन्हे लिखवाया। आप के समस्त विचारों में रामनाम (पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम) की महिमा प्रतिध्वनित होती है। कबीर परमेश्वर एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाण्ड के घोर विरोधी थे। मूर्तिपूजा, रोज़ा, ईद, मस्जिद, मंदिर उनका विचार था की यहाँ या इन क्रियाओं से आपका मोक्ष संभव नहीं।[13,14]
वे कभी कहते हैं-

'हरिमोर पिउ, मैं राम की बहुरिया' तो कभी कहते हैं, 'हरि जननी मैं बालक तोरा'।

और कभी "**बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर ॥** "
उस समय हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्म के लोग ही कबीर साहेब जी को अपना दुश्मन मानते थे क्योंकि वे अपना इकतारा लेकर दोनों धर्मों को परमात्मा की जानकारी दिया करते थे, वे समझाते थे कि हम सब एक ही परमात्मा के बच्चे हैं । उन्होंने अपनी भाषा सरल और सुबोध रखी ताकि वह आम आदमी तक पहुंच सके। कबीर साहेब जी को शांतिमय जीवन प्रिय था और वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण आज विदेशों में भी उनका समादर हो रहा है। कबीर साहेब जी सिर्फ मानव धर्म में विशवास रखते थे।

'पाहन पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजौं पहार।
वा ते तो चाकी भली, पीसी खाय संसार।।'

कबीर माया पापणी, फंध ले बैठी हटी ।
सब जग तौं फंधै पड्या, गया कबीरा काटी ||
अर्थ - कबीर दास जी कहते है की यह पापिन माया फंदा लेकर बाज़ार में आ बैठी है । इसने बहुत लोगों पर फंदा डाल दिया है , पर कबीर ने उसे काटकर साफ़ बाहर निकल आयें है । हरि भक्त पर फंदा डालने वाला खुद ही फंस जाता है ।

कबीर साहेब जी के प्रसिद्ध दोहे:
कबीर,हाड़ चाम लहू ना मेरे, जाने कोई सतनाम उपासी।
तारन तरन अभय पद दाता, मैं हूं कबीर अविनाशी।।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

भावार्थ: कबीर साहेब जी इस वाणी में कह रहे हैं कि मेरा शरीर हड्डी और मांस का बना नहीं है। जिसको मेरा द्वारा दिया गया सतनाम और सारनाम प्राप्त है, वह मेरे इस भेद को जानता है। मैं ही सबका मोक्षदायक हूँ, तथा मैं ही अविनाशी परमात्मा हूँ।
क्या मांगुँ कुछ थिर ना रहाई, देखत नैन चला जग जाई। एक लख पूत सवा लख नाती, उस रावण कै दीवा न बाती।|
भावार्थ: यदि एक मनुष्य अपने एक पुत्र से वंश की बेल को सदा बनाए रखना चाहता है तो यह उसकी भूल है। जैसे लंका के राजा रावण के एक लाख पुत्र थे तथा सवा लाख नाती थे। वर्तमान में उसके कुल (वंश) में कोई घर में दीप जलाने वाला भी नहीं है। सब नष्ट हो गए। इसलिए हे मानव! परमात्मा से तू यह क्या माँगता है जो स्थाई ही नहीं है।[15]

सतयुग में सतसुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा। द्वापर में करुणामय कहलाया, कलयुग में नाम कबीर धराया।।
भावार्थ: कबीर परमेश्वर चारों युगों में आते हैं। कबीर साहिब जी ने बताया है कि सतयुग में मेरा नाम सत सुकृत था। त्रेता युग में मेरा नाम मुनिंदर था द्वापर युग में मेरा नाम करुणामय था और कलयुग में मेरा नाम कबीर है।
कबीर, पत्थर पूजें हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार। तातें तो चक्की भली, पीस खाये संसार।।
भावार्थ: कबीर साहेब जी हिंदुओं को समझाते हुए कहते हैं कि किसी भी देवी-देवता की आप पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं जो कि शास्त्र विरुद्ध साधना है। जो कि हमें कुछ नही दे सकती। इनकी पूजा से अच्छा चक्की की पूजा कर लो जिससे हमें खाने के लिए आटा तो मिलता है।
जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान ।।
भावार्थ: परमात्मा कबीर जी हिंदुओं में फैले जातिवाद पर कटाक्ष करते हुए कहते थे कि किसी व्यक्ति से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए बल्कि ज्ञान की बात करनी चाहिए। क्योंकि असली मोल तो तलवार का होता है, म्यान का नहीं।
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।
भावार्थ: कबीर साहेब जी अपनी उपरोक्त वाणी के माध्यम से उन लोगों पर कटाक्ष कर रहे हैं जो लम्बे समय तक हाथ में माला तो घुमाते है, पर उनके मन का भाव नहीं बदलता, उनके मन की हलचल शांत नहीं होती। कबीर जी ऐसे व्यक्ति को कहते हैं कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन को सांसारिक आडंबरों से हटाकर भक्ति में लगाओ।
मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार । तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुरि न लागे डारि ।।

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

भावार्थ: परमात्मा कबीर जी हिन्दू और मुस्लिम दोनों को मनुष्य जीवन की महत्ता समझाते हुए कहते हैं कि मानव जन्म पाना कठिन है। यह शरीर बार-बार नहीं मिलता। जो फल वृक्ष से नीचे गिर पड़ता है वह पुन: उसकी डाल पर नहीं लगता। इसी तरह मानव शरीर छूट जाने पर दोबारा मनुष्य जन्म आसानी से नही मिलता है, और पछताने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात । एक दिना छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात ।।

भावार्थ: कबीर साहेब लोगों को नेकी करने की सलाह देते हुए इस क्षणभंगुर मानव शरीर की सच्चाई लोगों को बता रहे हैं कि पानी के बुलबुले की तरह मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है। जैसे प्रभात होते ही तारे छिप जाते हैं, वैसे ही ये देह भी एक दिन नष्ट हो जाएगी।[16]

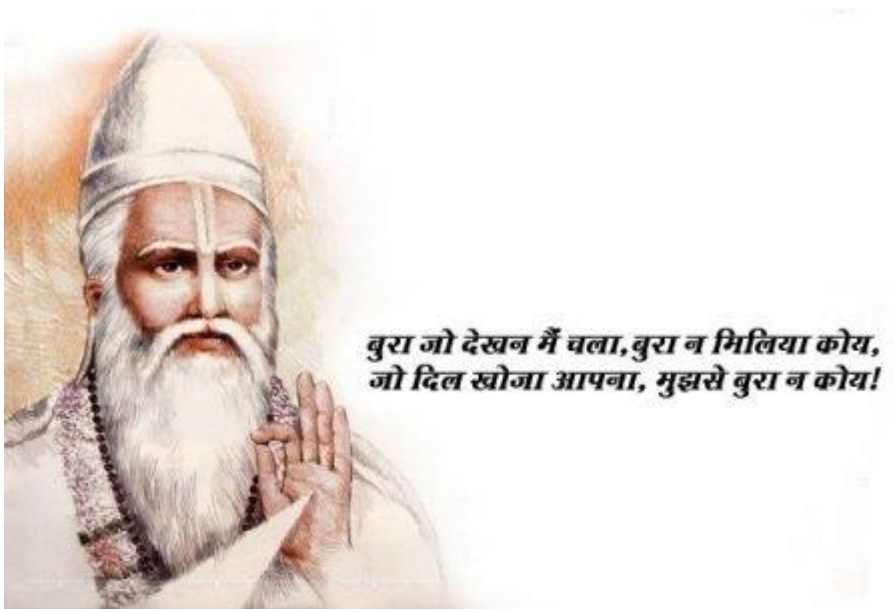

परिणाम

कबीर दास जी हिन्दी साहित्य के एक महान कवि ही नहीं, बल्कि विद्वंत विचारक एवं समाज सुधारक भी थे, उन्होंने अपनी कल्पना शक्ति और सकारात्मक विचारों के माध्यम से कई रचनाएं लिखीं और भारतीय संस्कृति के महत्व को समझाया। भक्तिकाल के प्रमुख कवि कबीरदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को जीवन जीने का सही मार्ग समझाया।इसके अलावा उन्होंने अपनी समाज में प्रचलित जातिगत भेदभाव, ऊंच-नीच आदि बुराईयों को भी दूर करने की कोशिश की। इसके साथ ही हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कबीरदास जी को कई भाषाओं का ज्ञान था, उनकी रचनाओं और दोहों में ब्रज, हरियाणवी, पंजाबी, हिन्दी, अवधी, राजस्थानी, समेत खड़ी बोली देखने को मिलती है।आपको बता दें कि कबीर दास जी भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति धारा से प्रभावित थे, उनका प्रभाव सिख, हिन्दू और इस्लाम तीनों धर्मों में देखने को मिलता है। वहीं कबीरदास जी के उपदेशों को मानकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को बदल सकता है।कबीर दास भारत के महान कवि और समाज सुधारक थे। वे हिन्दी साहित्य के विद्वान थे। कबीर दास के नाम का अर्थ महानता से है अर्थात वे भारत के महानतम कवियों में से एक थे।जब भी भारत में धर्म, भाषा, संस्कृति की चर्चा होती है तो Kabir Das – कबीर दास जी का नाम का जिक्र सबसे पहले होता है क्योंकि कबीर दास जी ने अपने दोहों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को दर्शाया है, इसके साथ ही उन्होनें जीवन के कई ऐसे उपदेश दिए हैं जिन्हें अपनाकर दर्शवादी बन सकते हैं इसके साथ ही कबीर दास ने अपने दोहों से समाज में फैली कुरोतियों को दूर करने की कोशिश की है और भेदभाव को मिटाया है।[17]

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

वहीं कबीर पंथी धार्मिक समुदाय के लोग कबीर के सिद्धांतो और उनके उपदेशों को अपनी जीवन का आधार मानते हैं। कहा जाता है कि कबीर दास जी निरक्षर थे अर्थात वे पढ़े लिखे नहीं थे लेकन वे अन्य बच्चों से एकदम अलग थे आपको बता दें कि गरीबी की वजह से उनके माता-पिता उन्हें मदरसे नहीं भेज सके। इसलिए कबीरदास जी किताबी विद्या नहीं ग्रहण कर सके।संत कबीरदास जी का विवाह वनखेड़ी बैरागी की कन्या "लोई" के साथ हुआ था। विवाह के बाद दोनों को संतान का सुख मिला कबीरदास जी के बेटे का नाम कमाल था जबकि बेटी का नाम कमाली था। वहीं इन लोगों को परिवरिश करने के लिए कबीरदास जी को अपने करघे पर काफी काम करना पड़ता था।जिससे घर साधु-संतों का आना-जाना लगा रहता था। वहीं उनके ग्रंथ साहब के एक श्लोक से अनुमान लगााया जाता है उनका पुत्र कमाल कबीर दास जी के मत का विरोधी था।

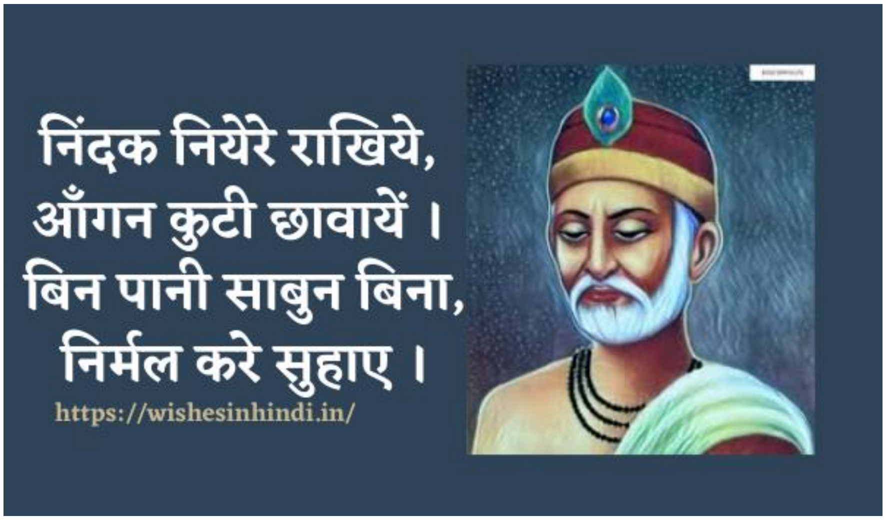

निष्कर्ष

करीब दास जी को कई भाषाओं का ज्ञान था वे साधु-संतों के साथ कई जगह भ्रमण पर जाते रहते थे इसलिए उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान हो गया था। इसके साथ ही कबीरदास अपने विचारो और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषा के शब्दों का इस्तेमाल करते थे। कबीर दास जी की भाषा को 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है।संत कबीर अपनी स्थानीय भाषा में लोगो को समझाते थे और उपदेश देते थे। इसके साथ ही वे जगह-जगह पर उदाहरण देकर अपनी बातों को लोगो के अंतरमन तक पहुंचाने की कोशिश करते थे। कबीर के वाणी को साखी, सबद और रमैनी तीनो रूपों में लिखा गया है। जो 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। कबीर ग्रन्थावली में भी उनकी रचनाएं का संग्रह देखने को मिलता है।[18]

उन्होनें ने गुरु का स्थान भगवान से बढ़कर बताया है। कबीरदास ने एक जगह पर गुरु को कुम्हार का उदाहरण देते हुए समझाया है कि – जो मिटटी के बर्तन के समान अपने शिष्य को ठोक-पीटकर सुघड़ पात्र में बदल देता है।कबीर दास हमेशा सत्य बोलने वाले निडर और निर्भाक व्यक्ति थे। वे कटु सत्य भी कहने से नहीं बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाते थे।संत कबीर वास्तव में मानवता के पक्षधर थे।इसीलिए वे हमेशा सभी धर्मों में व्याप्त आडंबरों का विरोध करते रहे।हम उन्हें विद्रोही कवि और सजग संत भी कह सकते हैं।[19,20]

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

संदर्भ

1. Kabir at the Wayback Machine Encyclopædia Britannica (2010) Accessed: July 27, 2011
2. Hugh Tinker (1990). South Asia: A Short History. University of Hawaii Press. पपृ° 75–77. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-8248-1287-4. मूल से 31 दिसंबर 1999 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2000
3. ↑ Carol Henderson Garcia; Carol E. Henderson (2002). Culture and Customs of India. Greenwood Publishing Group. पपृ° 70–71. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-313-30513-9. मूल से 31 दिसंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 July 2010
4. ↑ David Lorenzen (Editors: Karine Schomer and W. H. McLeod, 1987), The Sants: Studies in a Devotional Tradition of India, Motilal Banarsidass Publishers, ISBN 978-81-208-0277-3, pages 281–302
5. "संत कबीर ने दुनिया को पढ़ाया एकता का पाठ, 624वें प्रकट दिवस पर पढ़ें उनकी जीवनी". Zee News Hindi. अभिगमन तिथि 2002
6. "पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी: सभी आत्माओं के जनक - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2001.
7. ↑ Kabir Das
8. ↑ नवभारतटाइम्स.कॉम 2003"यकीन मानिए, आपने कभी ऐसा गुरु और शिष्य नहीं देखा होगा". नवभारत टाइम्स. अभिगमन तिथि 2004
9. "कबीर प्रकट दिवस 2001: तिथि, उत्सव, घटनाएँ, इतिहास - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2004
10. ↑ "मोक्ष प्राप्ति के नियम (कबीर परमात्मा के) - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2006
11. ↑ "All you need to know about Kabir Saheb Prakat (Appearance) Diwas". Hindustan Times (अंग्रेज़ी में). 2007 अभिगमन तिथि 2008
12. ↑ "पवित्र वेदों में पूर्ण परमात्मा की अवधारणा (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2009
13. ↑ "पवित्र कुरान शरीफ में प्रभु सशरीर है तथा उसका नाम कबीर है का प्रमाण - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2008
14. ↑ "पवित्र बाईबल में प्रभु मानव सदृश साकार का प्रमाण - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2005
15. ↑ "बाइबिल के अनुसार ईसाई धर्म में परम ईश्वर - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2010
16. ↑ "Bible Gateway passage: Iyov 36:5 - Orthodox Jewish Bible". Bible Gateway (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2010
17. ↑ "श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी में साकार परमात्मा के प्रमाण - Jagat Guru Rampal Ji". www.jagatgururampalji.org. अभिगमन तिथि 2001
18. ↑ NEWS, SA 2000"कबीर साहेब जी के नाम से बने बारह (12) नकली पंथों की विस्तृत जानकारी". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2002

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 2, Issue 11, November 2013

19. ↑ NEWS, SA 2003 "17 फरवरी बोध दिवस - तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2003
20. "Maghar Story in Hindi: कबीर साहेब प्राकट्य: Kabir जी काशी से मगहर क्यों गए?". S A NEWS (अंग्रेज़ी में). 2004 अभिगमन तिथि 2005